

कबीर की साखियाँ

कबीरदास (1398-1518)

कबीर का जन्म 1388 में काशी में हुआ माना जाता है। गुरु रामानंद के शिष्य कबीर ने 120 वर्ष की आयु पाई। जीवन के अंतिम कुछ वर्ष मगहर में बिताए और वहीं चिरनिद्रा में लीन हो गए।

कबीर का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ था जब राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक क्रांतियाँ अपने चरम पर थीं। कबीर क्रांतदर्शी कवि थे। उनकी कविता में गहरी सामाजिक चेतना प्रकट होती है। एक ओर धर्म के बाह्याडंबरों पर उन्होंने गहरी और तीखी चोट की है तो दूसरी ओर आत्मा - परमात्मा के विरह - मिलन के भावपूर्ण गीत गाए हैं। कबीर शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा अनुभव ज्ञान को अधिक महत्त्व देते थे। उनका विश्वास सत्संग में था और वे मानते थे कि ईश्वर एक है, वह निर्विकार है, अरूप है।

पाठ प्रवेश

साखी शब्द साक्षी शब्द का ही तदभव रूप है। साक्षी शब्द साक्ष्य से बना है जिसका अर्थ होता है - प्रत्यक्ष ज्ञान। यह प्रत्यक्ष ज्ञान गुरु शिष्य को प्रदान करता है। संत संप्रदाय में अनुभव ज्ञान की ही महत्ता है, शास्त्रीय ज्ञान की नहीं। कबीर का अनुभव क्षेत्र विस्तृत था। कबीर जगह - जगह भ्रमण कर प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करते थे। अतः उनके द्वारा रचित साखियों में अवधी, राजस्थानी, भोजपुरी और पंजाबी भाषाओं के शब्दों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इसी कारण उनकी भाषा को 'पचमेल खिचड़ी' कहा जाता है। कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी भी कहा जाता है।



ऐसी बाँणी बोलिये, मन का आपा खोइ ।
अपना तन सीतल करै, औरन को सुख होइ । ।

भावार्थ - कबीर जी यह कहना चाहते हैं कि मनुष्य को ऐसी वाणी का प्रयोग करना चाहिए जिससे मन का आपा अर्थात् अहंकार समाप्त हो जाए। जिससे तन को भी शीतलता का अनुभव हो तथा सुनने वाले को भी सुख की अनुभूति हो। कवि यह समझना चाहते हैं कि वाणी की मधुरता से जीवन में आत्मिक शांति तथा सुख प्राप्त होता है तथा सुनने वालों पर भी विशेष प्रभाव पड़ता है।

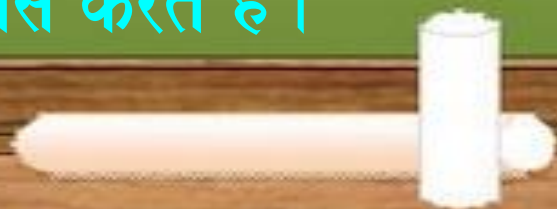
विशेष - अहंकाररहित मधुर वाणी का प्रयोग करने की सीख।



कस्तूरी कुंडलि बसै मृग ढूँढै बन माँहि ।
ऐसै घटि घटि राँम है दुनिया देखै नाँहि । ।

भावार्थ- कबीरदास जी कहते हैं कि मनुष्य के घट (शरीर) में ही परमात्मा का वास है अर्थात् शक्ति का स्रोत हमारे भीतर ही है पर इसका हमें ज्ञान नहीं है । हम उसे बाहर कर्मकांड आदि में ढूँढते हैं । अपने अंदर ढूँढने का यत्न ही नहीं करते । हमारी दशा भी उस मृग जैसी ही जिसकी नाभि में ही कस्तूरी होती है, पर उसे उसका बोध नहीं होता और उस सुगंध को पाने के लिए वह जंगल में इधर - उधर भटकता फिरता है ।

विशेष - आत्मा परमात्मा का ही अंश है । परमात्मा मनुष्य के हृदय में, उसके घट- घट में वास करते हैं ।



जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाँहि ।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि । ।

भावार्थ - कबीर जी के अनुसार जब तक मैं अर्थात् अहंकार का भाव मन में था तब तक वहाँ ईश्वर का वास नहीं था । केवल मन में अज्ञानरूपी अंधकार ही समाया हुआ था । जब ज्ञान रूपी दीपक जलाया तब मन का अज्ञानरूपी सारा अंधकार नष्ट हो गया । अर्थात् अहंकार के नष्ट होते ही कवि को ईश्वर की प्राप्ति हो गई । अहंकार और ईश्वर साथ - साथ नहीं रह सकते । ईश्वर प्राप्ति के लिए अहंकार नष्ट होना आवश्यक है ।

विशेष - अहंकाररहित निर्मल मन द्वारा ही ईश्वर की प्राप्ति संभव है ।



सुखिया सब संसार है खाये अरु सोवै ।

दुखिया दास कबीर है जागे अरु रोवै । ।

भावार्थ - इस साखी में कबीर जी सांसारिक विषयों में लिप्त लोगों पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि ऐसे लोग विषय वासनाओं में लीन रहने को ही सच्चा सुख मानते हैं तथा खाते हैं और सो जाते हैं । वे अज्ञान के कारण जीवन के वास्तविक उद्देश्य को नहीं समझते । दूसरी ओर कबीर जी ज्ञानी व्यक्ति हैं तथा ईश्वर की भक्ति में लीन हैं । कबीर जी जागते और दुखी होते क्योंकि वे सांसारिक विषयों में लिप्त लोगों की चिंता करते हैं । यहां कबीर जी के अनुसार सोना अज्ञान का तथा जागना ज्ञान का प्रतीक है ।

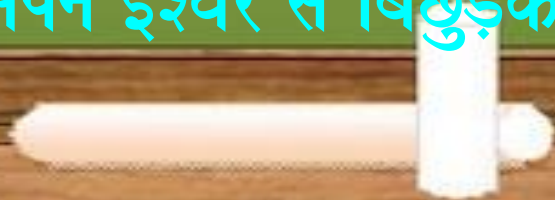
विशेष - मनुष्य को भौतिक सुखों को त्यागकर ईश्वर प्राप्ति की ओर अग्रसर होना चाहिए ।



बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ ।
राम बियोगी ना जिवै, जिवै तो बौरा होइ । ।

भावार्थ - कबीर जी कहते हैं कि जिस प्रकार यदि किसी व्यक्ति को सर्प काट लेता है तो उस पर किसी मंत्र या उपचार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और या तो वह मनुष्य जीवित नहीं रहता और यदि बच भी जाता है तो बावला हो जाता है । उसी प्रकार इस शरीर में राम से वियोग रूपी सर्प बस गया है जिस पर किसी मंत्र का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है अर्थात् राम से वियोग होने पर वियोगी जी नहीं पाता है और यदि जी जाता है तो उसकी दशा बावलों जैसी हो जाती है ।

विशेष - राम से प्रेम करने वालों के लिए वियोग की पीड़ा विष से भी घातक होती है वे अपने ईश्वर से बिछुड़कर जी नहीं पाते हैं ।



निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटी बँधाइ ।

बिन साबण पाँणी बिना, निरमल करै सुभाइ । ।

भावार्थ - कबीर जी कहते हैं कि हमें अपने निंदक की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए अपितु अपने निंदक को अपने निकट अर्थात् आस पास रखना चाहिए । हो सके तो अपने आँगन में ही उसके लिए कुटिया बनवा देनी चाहिए क्योंकि इसमें हमारा ही लाभ है । जब वह हमें हमारे दोषों के बारे में बताएगा तो हम उन्हें सुधार सकेंगे तथा इस प्रकार निंदक बिना साबुन पानी के ही हमारे स्वभाव को निर्मल बना देगा ।

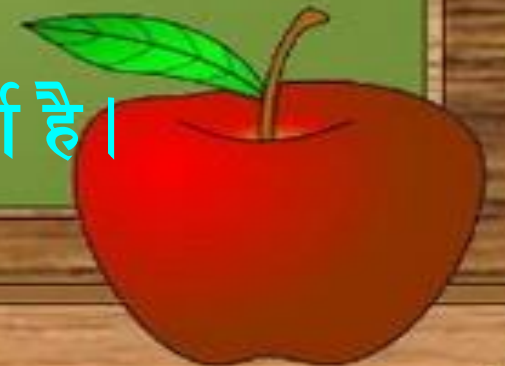
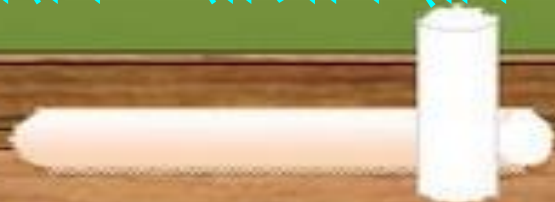
विशेष - हमें निंदक द्वारा बताए गए दोषों को सुनकर विचलित नहीं होना चाहिए अपितु उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए ।



पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा पंडित भया न कोइ ।
ऐकै अषिर पीव का पढ़ै सु पंडित होइ । ।

भावार्थ - प्रस्तुत साखी में कबीर जी प्रेम मार्ग की श्रेष्ठता पर बल देते हुए कहते हैं कि शास्त्र पढ़ - पढ़कर सारा संसार नष्ट होता चला जा रहा है। युग बीतते चले जा रहे हैं लेकिन कौन सच्चे अर्थों में पंडित या विद्वान बन पाया अर्थात् शास्त्र पढ़ने वालों ने ईश्वर प्रेम का अलौकिक आनंद कब प्राप्त किया है। कबीर की दृष्टि में जिसने भी राम नाम अर्थात् ईश्वर के नाम के दो अक्षरों को जान लिया वास्तव में वही सच्चा विद्वान अर्थात् सच्चा पंडित है।

विशेष - शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा ईश्वर प्रेम की अनुभूति अधिक महत्वपूर्ण है।



हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि ।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि । ।

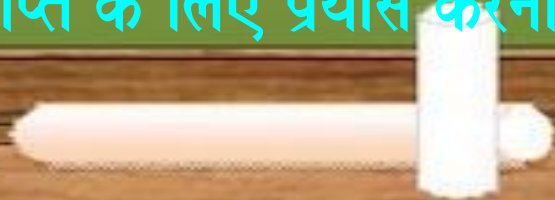
भावार्थ - कबीर जी कहते हैं कि मैंने ज्ञान रूपी मशाल हाथ में लेकर अपना घर जला लिया अर्थात् अपने मन से मोह, माया आदि सांसारिक बंधनों को नष्ट कर दिया है क्योंकि ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में यही सबसे बड़े बाधक हैं । कवि कहते हैं कि वे अब उन लोगों का घर जलाएँगे अर्थात् मोह, माया आदि अवगुणों को समाप्त करने में उनकी सहायता करेंगे जो ईश्वर अर्थात् ज्ञानप्राप्ति के लिए उनके साथ चलना चाहते हैं ।

विशेष - आंतरिक विकारों को दूर करने के लिए ज्ञान रूपी मशाल की आवश्यकता होती है ।



कबीर की साखियों का प्रतिपादय

प्रस्तुत सभी साखियाँ उपदेशात्मक हैं। कबीर जी कहते हैं कि मनुष्य को हमेशा मीठी वाणी बोलनी चाहिए जिससे वह स्वयं तथा सुनने वाला दोनों प्रसन्न होते हैं। कबीर का मानना है कि ईश्वर सर्व-व्यापी हैं। जब मनुष्य ज्ञान रूपी दीपक अपने मन में जलाता है तब अज्ञान रूपी अंधकार नष्ट हो जाता है तथा ईश्वर की प्राप्ति होती है। कबीर जी कहते हैं कि इस संसार में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो खाते पीते और सोते हैं अर्थात् सुख - सुविधाओं से भरा जीवन जीते हैं। उन्हें ईश्वरीय ज्ञान से कोई सरोकार नहीं। दूसरी ओर वे भी हैं जो प्रभु के वियोग में तड़पते रहते हैं। कबीर जी निंदक को पास रखने के लिए भी कहते हैं क्योंकि वह हमें हमारे दोषों को दूर करके स्वभाव को निर्मल बनाने में हमारी सहायता करेगा। कवि यह भी कहते हैं कि बड़े - बड़े ग्रंथ पढ़ने से कोई विद्वान नहीं बनता अपितु ईश्वर प्रेम का एक अक्षर पढ़ लेने से ही ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है। अतः विषय वासनाओं को त्यागकर ईश्वर प्राप्ति के लिए प्रयास करना चाहिए।



आई. टी. एल. पब्लिक
स्कूल
सरिता दहिया

